उड़ान

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की उड़ान
घर घर शिक्षा की उड़ान
डिजिटल मीडिया के सहयोग से उच्च शिक्षा की उड़ान

www.uou.ac.in

अप्रैल - जून 2024

सपांदन मडलं

संरक्षक : प्रो.ओ.पी.एस.नेगी, कुलपति
प्रबंध संपादक : श्री खेमराज भट्ट, कुलसचिव
संपादक: प्रो. राकेश रयाल
उप संपादक : डॉ. शशांक शुक्ल
सहायक संपादक : डॉ. राजेंद्र क्वीरा

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एक भारत श्रेष्ठ भारत

भारत 2023 INDIA

ACCREDITED WITH GRADE B++ NAAC

कुलपति की कलम से...

प्रिय पाठकों!

'उड़ान' का यह अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है| हर्ष की यह अनुभूति सार्वजनिक है और यह सांस्थानिक प्रगति के कारण सम्भव हुई है। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की प्रगति यात्रा के विभिन्न पक्ष को समेटे यह अंक विश्वविद्यालय की एक झलक अवश्य देगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

वर्तमान युग में बदलाव की प्रक्रिया बहुत तीव्र है। तीव्र बदलाव की इस प्रक्रिया में अनुभूति का रूप भी तेजी से बदलता जा रहा है| अनुभूति के बदले रूप को वही शिक्षा पकड़ पायेगी, जिसमें स्वयं में लचीलापन होगा। ऐसी शिक्षा पद्धति जो लचीली तो हो साथ ही उसमें कथ्य की दृढ़ता भी कम न हो। ऐसी शिक्षा पद्धति जिसमें प्रसरण की व्यापकता हो, किन्तु अपने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को विस्मृत न करे| दूरस्थ शिक्षा पद्धति युग की इन्हीं आवश्यकताओं व आकांक्षाओं को पूरा करने के एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरी है| दूरस्थ शिक्षा पद्धति Think globally Act Locally की तर्ज पर कार्य करती है। यह उत्तर आधुनिकता के विश्व ग्राम का अकादमिक प्रतिउत्तर है | वैश्विक चिंतन को प्रादेशिक आकांक्षा से युक्त करने की पहल ही इस पद्धति के मूल में है।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का उद्देश्य है दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को दुर्गम क्षेत्रों क्षेत्रों तक पहुँचाना एवं विद्यार्थियों को नवीनतम संचार साधनों का लाभ देना। इस नीति के अनुपालन क्रम में मुक्त विश्वविद्यालय ने कई तरह की पहल की है। विश्वविद्यालय की विद्या परिषद में छात्र हित के कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। छात्र हित को देखते हुए विश्वविद्यालय ने निर्णय किया है कि जिन विषयों का शुल्क 10 हज़ार से अधिक है, उन विषयों में छात्र शुल्क सेमेस्टर में बाँट कर जमा कर सकते हैं। यह भी निर्णय किया गया कि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को डेब आईडी भी बनाना अनिवार्य होगा, इस पहल से छात्र राष्ट्रीय प्रक्रिया में भागीदार बन सकेंगे।

इस अवधि में विश्वविद्यालय ने दूसरे कई अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं सस्थानों के साथ शैक्षिक करार (एमओयू) किये| विश्वविद्यालय Terbuka (UT) विश्वविद्यालय, इण्डिनोशिया के साथ करार करने जा रहा है। इस बीच डीबीएस कॉलेज, देहरादून के साथ एक शैक्षिक करार किया गया। इसी तरह जगत गुरु नानक देव पंजाब राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के साथ भी विश्वविद्यालय ने एक एमओयू किया। ये शैक्षिक करार विश्वविद्यालय को ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कराने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इस अवधि में विश्वविद्यालय में महिला अध्ययन केंद्र की स्थापना हुई। स्त्रियों को मुख्यधारा में लाने की दृष्टि से यह अध्ययन केंद्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, ऐसा मुझे विश्वास है|

विश्वविद्यालय ने सामाजिक विकास के अनेक कार्य किये हैं, जिसकी संक्षित रुपरेखा आपको इस अंक में देखने को मिलेगी। विभिन्न शैक्षिक व अकादमिक गतिविधियों को समेटे उड़ान का यह अंक आपको विश्वविद्यालय की एक रुपरेखा समझाने में मदद करेगा। विश्वविद्यालय की प्रगति में जुड़े सभी सदस्यों को मैं धन्यवाद देता हूँ। साथ ही भविष्य में भी आप सभी का सहयोग मिलेगा, यह आशा करता हूँ।

प्रो. ओम प्रकाश सिंह नेगी
कुलपति

संपादकीय

मीडिया की नयी भूमिका

पत्रकारिता, संचार-जनसंचार, मीडिया, न्यू मीडिया, डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और समय –समय पर पत्रकारिता और मीडिया के ऐतिहासिक विकास के इन सभी पीढ़ियों के तमाम संचार और संवाद माध्यमों का प्रयोग समाज के संचालन, समाज में समन्वयनस्तापित करने में और समाज के विकास के लिए किया जाता रहा है। यह हमारे समाज में युगों से चलता आ रहा है। फिर चाहे सतयुग में देवर्षि नारद मुनि की संवाद और संचार पद्धति व प्रणाली रही हो या त्रेतायुग में श्री हनुमान का सीता जी के पास श्री राम का संदेश पहुंचाना रहा हो या द्वापरयुग में महाभारत युद्ध में धृतराष्ट्र को संजय द्वारा युद्ध की सूचना देनी रही हो, ये सब संचार और संवाद की प्राचीन पद्धतियां रही हैं।

यहां कहने का आशय यह है कि हमारी सभ्यता और समाज में संवाद और संचार प्रकिया युगों से रही है, जिसका उपयोग प्रत्येक युग में समन्वय स्थापित करने व समाज के उत्थान व विकास के लिए किया जाता रहा है। भारत के विशेष संदर्भ में, यदि वर्तमान युग की बात करें तो यहां समय-समय पर संचार-जनसंचार के माध्यमों में हुए तकनीकी विकास ने समाज में प्रभावी स्थान बनाया है। भोजपत्रों से शुरू हुई पत्रकारिता आज डिजिटल मीडिया तक पहुंच गई है। पत्रकारिता या जनसंचार माध्यमों की भूमिका हमेशा समाज में जन-जन तक सूचना व जानकारी प्रेषित कर, समाज में संवाद स्थापित करता तथा सामंजस्य व समन्वय स्थापित करना, समाज का विकास करना मुख्य लक्ष्य रहा है।

मीडिया द्वारा सूचना, जानकारी प्रेषित कर समाज को जागरूक व विकास की बात करें तो समाज के सभी पहलूओं – क्षेत्रों में विकास को आगे बढ़ाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन्हीं में से एक है शैक्षिक विकास। क्योंकि किसी भी समाज के चहुमुखी विकास के लिए उस समाज का शिक्षित होना जरूरी है। शिक्षा के क्षेत्र में आयी क्रांति में मीडिया की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज के आधुनिक और तकनीकी युग की बात करें तो जहां वर्तमान में शिक्षा में समाज को जागरूक करने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है वहीं शिक्षा के प्रचार-प्रसार में तथा शिक्षा से वंचित, जरूरतमंद तक शिक्षा पहुंचाने में अपना योगदान भी दे रही है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के लिए मीडिया वरदान स्वरूप है। इस पद्धति में शिक्षण संस्थान एवं शिक्षकों से दूर बैठे छात्रों/शिक्षार्थियों तक शिक्षा/ज्ञान पहुंचाने में जनसंचार के साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह लगता है कि धीरे – धीरे जनसंचार का आधुनिक स्वरूप व साधन दूरस्थ शिक्षा की जरूरत बन जाएंगे। ऑनलाईन शिक्षा भी दूरस्थ शिक्षा का माध्यम बनता नजर आ रहा है। इस डिजिटल युग में डिजिटल मीडिया के तमाम साधनों का प्रयोग करने के लिए जहां उपयोगकर्ता को डिजिटल मीडिया व उपकरणों की जानकारी जरूरी है, वहीं इनके लिए सामग्री तैयार करने, प्रस्तुत करने का व्यावहारिक ज्ञान भी आवश्यक है।

अंतत: यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता एवं जनसंचार माध्यम जन –जन तक संचार व संवाद स्थापित करने से लेकर जन – जन के विकास में उपयोगी हैं। जन व समाज के शैक्षिक विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका अहम है। हांलाकि इसे और प्रभावी बनाया जा सकता है। खासकर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में जनसंचार माध्यम या मीडिया के उपयोग को बेहत्तर बनाने के लिए जहां पत्रकारिता एवं जनसंचार की अवधारणा को समझना आवश्यक है, वहीं जनसंचार माध्यम के नए स्वरूप व साधनों को जानना व समझना भी आवश्यक है। जनसंचार माध्यम (मीडिया) के नए स्वरूप न्यू मीडिया के साधनों को समझ कर, इन साधनों के अनुरूप सामग्री तैयार करना व प्रस्तुत करने की प्रभावी तकनीकी का ज्ञान होना आवश्यक है, जिससे हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को लक्ष्य तक पहुंचाने में न्यू मीडिया के डिजिटल साधनों का बेहत्तर उपयोग कर सकें और दूरस्थ शिक्षा भी प्रभावी रूप से लक्ष्य तक पहुंच सके।

डॉ. राकेश चन्द्र रयाल

हिंदी व भाषायी अखबार ही हैं असली भारत की पहचान: प्रो. के.जी. सुरेश

हिंदी पत्रकारिता दिवस के 198 साल पर हुआ राष्ट्रीय सेमिनार
एशिया के सबसे पहले मीडिया संस्थान के कुलपति ने की शिरकत
नए राष्ट्र के निर्माण के लिए हिंदी पत्रकारिता को बताया आवश्यक

"भाषा के बिना पत्रकारिता अधूरी है। आज भाषा का क्षरण हो गया है। मीडिया शिक्षार्थियों का साहित्य से नाता टूट गया है। भारतीय भाषाओं के अखबारों में अपनी माटी की खुशबू है। जिसका जिंदा रहना जरूरी है"। यह वक्तव्य प्रोफेसर के.जी सुरेश ने विकसित भारत 2047 का संकल्प और न्यू मीडिया; हिंदी पत्रकारिता के विशेष संदर्भ में शीर्षक राष्ट्रीय संगोष्ठी में दी। प्रो के जी सुरेश एशिया के पहले व देश के सबसे बड़े मीडिया संस्थान माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग द्वारा हिंदी पत्रकारिता दिवस पर एक आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अथिथि के रूप में प्रो के. जी. सुरेश ने सहभागिता की। उन्होंने कहा कि आजादी के वक्त राष्ट्रीयता हमारी पत्रकारिता का अभिन्न अंग थी। आज भी एक पत्रकार को एक मीडिया पेशेवर को अपने राष्ट्र को केन्द्र में रखकर पत्रकारिता करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी का पहला अखबार उदंत मार्तंड बेशक 9 माह में बंद हो गया लेकिन उसका प्रभाव बहुत गहरा पड़ा। उन्होंने मीडिया के शिक्षार्थियों के अलावा भी देश के हर व्यक्ति के लिए मीडिया साक्षरता को जरूरी माना।

इस मौके पर सेमिनार के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली में प्रोफेसर डा. प्रमोद कुमार ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता के 200 सालों में हमें आत्मावलोकन करने की जरूरत है कि समाज के सभी तबकों को मुख्यधारा में क्या हम ला पाए हैं? उन्होंने मीडिया संस्थानों को पाठक सर्वे करने की सलाह देते हुए कहा कि सकारात्मक खबरों को अखबारों को प्रमुखता से प्रकाशित करना चाहिए ताकि लोगों में निराशा की जगह उत्साह का संचार हो। सेमिनार में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ओ.पी.एस नेगी ने कहा कि पत्रकारिता ही समाज को दिशा देती है, लोगों को सूचना सम्पन्न बनाती है। इसीलिए एक पत्रकार का संवेदनशील होना, दूरदृष्टिवान होना...राष्ट्र के लिए सोचना बहुत जरूरी है। सेमिनार के सहआयोजक एमबीपीजी कालेज हल्द्वानी के प्रिंसिपल प्रो. बनकोटी ने भी पत्रकारिता में जनसरोकारों की जरूरत को जरूरी बताया। यह सेमिनार मीडिया स्टडीड एंड रिसर्च एसोसिएशन, एमबीपीजी कालेज हल्द्वानी व उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित की गई थी।

सेमिनार के आयोजक विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा के विभागाध्यक्ष डा. राकेश रयाल ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता के इन 198 सालों में भाषाई तौर पर पत्रकारिता में काफी गिरावट आई है। मीडिया शिक्षार्थियों की नई पीढ़ी न तो हिंदी की देवनागरी लिपि पंसद करती है और न ही रिपोर्टिंग वाली पत्रकारिता को। सभी को एंकर बनना है या फिर कारपोरेट में इवेंट मैनेजर। ऐसे में चुनौती बड़ी है कि कैसे पत्रकारिता की नयी पीढी के सामने हिंदी पत्रकारिता के आदर्शों को रखा जाए। मानविकी विद्याशाखा की निदेशक प्रो. रेनू प्रकाश ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता को आगे बढ़ाने के लिए उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा नये रचनात्मक प्रयोग किये जाएंगे। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. पी.डी, पंत ने सभी अतिथियों का आभार जताया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र का संचालन हिंदी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डा. शशांक शुक्ला ने किया। सेमिनार के द्वितीय सत्र में बतौर मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार जगमोहन रौतेला ने हिंदी पत्रकारिता के लिए उत्तराखंड के पत्र पत्रिकाओं पर बहुत विस्तार से बात रखी। टिहरी राजशाही का आंदोलन हो या स्वतंत्रता संग्राम या फिर उत्तराखंड आंदोलन, हिंदी अखबारों ने ही लोगों में चेतना का प्रचार-प्रसार किया। इस मौके पर उत्तराखंड के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. गणेश पाठक ने बतौर अध्यक्षीय उद्बोधन में अपने 30 साल के पत्रकारिता के अनुभवों को साझा किया। इस मौके पर दर्जन भर शोधार्थियों ने विभिन्न विषयों पर शोध पत्र पढ़े, जिनमें उत्तराखंड मुक्त विवि के शोधार्थी गणेश जोशी ने हिंदी पत्रकारिता में हिंदी भाषा पर अपना पत्र प्रस्तुत किया। आशा जोशी ने हिंदी पत्रकारिता और तकनीकी पर शोधपत्र पढ़ा। दीपिका नेगी ने सोशल मीडिया में फेक न्यूज पर पेपर प्रस्तुत किया। सेमिनार में एमबीपीजी कालेज ह्ल्दवानी, राजकीय महाविद्यालय कोटाबाग व उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के शोधार्थियों ने शोध पत्र पढ़े।

इस मौके पर संगोष्ठी के सह सयोंजक राजेंद्र क्वीरा, अल्मोड़ा में हिंदी विभाग की डा. ममता पंत, डा. कल्पना लखेड़ा, डा. अखिलेश सिंह, डा. मनोज पांडे, डा. डिगर सिंह फरर्सवाण, मीडिया स्टडीज एंड रिसर्च एसोसिएशन के विपिन चन्द्रा, भूपेन्द्र सिंह, सुमित सिंह, अनिल नैलवाल, हरीश गोयल, विभु कांडपाल समेत कई लोग उपस्थित रहे।

Hello Haldwani
हैलो हल्द्वानी
91.2 FM

TOLL FREE
18001804025

/uoulive
/uoulive

UOU APP GET IT ON Google Play

Hello Haldwani 91.2 FM GET IT ON Google Play

यूओयू : विद्या परिषद की 29 वीँ बैठक सम्पन्न

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की विद्यापरिषद की 29 वीँ बैठक बुधबार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ओ. पी. सिंह नेगी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर मुहर लगी। बैठक में सर्वप्रथम विद्यापरिषद की 28 वी बैठक के कार्यवृत्त पर अनुमोदन दिया गया। इसके अलावा सहायक प्राध्यापक (ए.सी.) के सेवा विस्तार हेतु

सीका द्वारा बनाये गए मानकों पर अनुमोदन दिया गया। यूजीसी नियमानुसार अब दूरस्थ शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों के लिए एबीसीआईडी के साथ डेब आई डी बनाना भी अनिवार्य होगा, जिसे बैठक में अनुमोदित किया गया।

बैठक में अकादमिक कैलेंडर 2024-25 को अनुमोदन दिया गया। छात्र हित को देखते हुए यह निर्णय किया गया कि जिन प्रोग्राम का शुल्क 10 हजार से अधिक है, उसे छात्र वार्षिक रूप में नहीं बल्कि सेमेस्टर में बाँट कर के जमा करा सकते हैँ, जिससे छात्रों पर एक साथ भार नहीं पड़ेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कैस (पदोन्नति) के लिए जारी अधिसूचना को अंगिकृत किया गया, जिसमें यूजीसी विनिमय 2010 के आधार पर भी शिक्षकों की पदोन्नति की जा सकती है। पत्रकारिता एवं मीडिया विभाग के सहायक प्राध्यापक भूपेन सिंह की समाजशास्त्र में प्राप्त पी-एच.डी की उपाधि को भी पत्रकारिता एवं जनसंचार में पी एच डी कराने के लिए अर्ह मान लिया गया है।

बैठक में कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी एस रावत, प्रो. एल के सिंह, प्रो. निलेश मोदी, प्रो. नीता बोरा शर्मा, प्रो. डी पी त्रिपाठी बाह्य सदस्य के रूप में तथा विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. पी डी. पंत, परीक्षा नियंत्रक प्रो. सोमेश कुमार, वित्त नियंत्रक एस पी सिंह, प्रो. रेनू प्रकाश, प्रो. जितेंद्र पाण्डेय, डॉ. एम एम जोशी, डॉ. डी एस फरस्वाण आदि मौजूद रहे।

योग का साप्ताहिक कार्यक्रम

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के योग विभाग द्वारा कुलपति प्रो. ओ.पी.एस. नेगी जी के संरक्षण व कुलसचिव प्रो. पी. डी. पन्त जी के निर्देशन में साप्ताहिक योग कार्यक्रम का शुभारम्भ दिनांक 15 जून 2024 को किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक प्रो. जितेंद्र पाण्डे एवं मानवीय विद्याशाखा की निदेशक प्रो. रेनू प्रकाश द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक प्रो. जितेंद्र पाण्डे द्वारा योग के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई तथा विभिन्न प्रतिभागियों को अग्रिम शुभकामनाएं प्रेषित की गयीं।

मानवीय विद्याशाखा की निदेशक प्रो. रेनू प्रकाश द्वारा वर्तमान परिदृश्य में योग की भूमिका और योग द्वारा उचित जीवनशैली विषय पर चर्चा की गयी और प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी गयीं। तत्पश्चात योग विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. दीपक कुमार ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की तथा योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. भानु प्रकाश जोशी को इस साप्ताहिक योग कार्यक्रम की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन हेतु विशेष धन्यवाद दिया। उसके पश्चात ध्यान सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें योग विभाग की सहायक प्राध्यापक नीता दियोलिया द्वारा ध्यान के अभ्यास से सम्बंधित विभिन्न जानकारियाँ दी गयीं एवं ध्यान का अभ्यास कराया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वजनों का धन्यवाद ज्ञापन योग विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अनिल कोठारी द्वारा किया गया। साप्ताहिक योग कार्यक्रम में योग विभाग की सहायक प्राध्यापक दीक्षा बिष्ट एवं योग प्रशिक्षक श्री ललित मोहन व श्री यशवंत कुमार ने ध्यान सत्र के अभ्यास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन की। इस कार्यक्रम में डॉ. प्रीति शर्मा, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. दीप प्रकाश, डॉ. प्रीति बोरा, डॉ. मोनिका द्विवेदी, डॉ. पूजा भट्ट, डॉ. ज्योति जोशी, सुमन अधिकारी, डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. एस. एन. ओझा आदि मौजूद रहे।

एमओयू पर किये हस्ताक्षर

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय एवं डी वी एस कॉलेज देहरादून के बीच अकादमिक और शोध के क्षेत्र में मिलकर काम करने हेतु एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर हुआ। विभिन्न अकादमिक बिन्दुओ पर दोनों संस्थानों के मध्य यह सयुंक्त करार हुआ है।

सयुंक्त करार पर मुक्त विश्वविद्यालय की तरफ से कुलसचिव प्रो. पी डी पंत तथा डी वी एस कॉलेज की तरफ से कॉलेज के प्राचार्य प्रो. वी पी पाण्डेय ने हस्ताक्षर किये। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. पी.डी. पंत ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अकादमिक और शोध गतिविधियों में गुणवत्ता बढाने और उन्हें प्रोत्साहन देने के के लिए दूसरे संस्थानों से अनुबंध किये जाने पर जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि शिक्षा और शोध में सुधार लाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय लगातार अन्य संस्थानों से अनुबंध कर रहा है। उन्होंने कहा कि इसका लाभ राज्य के अन्य शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों और मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षार्थियों को मिलेगा।

यूओयू : कौशल पाठ्यक्रमों के लिए गठित विशेषज्ञ समिति की बैठक में लिए कई फैसले

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के व्यावसायिक अध्ययन विभाग द्वारा दिनांक 3/6/2024 को नए कौशल पाठ्यक्रमों को तैयार किए जाने हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति ओ पी एस नेगी जी के द्वारा की गयी इस। बैठक में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुभवी विशेषज्ञों ने भाग लिया, जिसमे प्रमुख रूप से प्रो. दीपक कुमार पांडे, सहायक निदेशक, उच्च शिक्षा एवं नोडल

अधिकारी, देवभूमि उद्यमिता योजना, उत्तराखंड; श्री भगत सिंह, अपर निदेशक, राष्ट्रीय कौशल संस्थान, हल्द्वानी; डॉ. अमित कुमार द्विवेदी, परियोजना निदेशक, देवभूमि उद्यमिता योजना, भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद; डॉ. सुमित कुमार, उद्यमिता विशेषज्ञ (शैक्षणिक एवं अनुसंधान), भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान,(EDII) अहमदाबाद; श्री करन सिंह, उप निदेशक, नैसकॉम, नई दिल्ली; सुश्री सुभनी त्यागी, उप प्रबन्धक, नैसकॉम, नई दिल्ली; प्रोफेसर जीतेन्द्र पांडे, निदेशक, कंप्यूटर साइंस एंड आईटी, डॉ आशुतोष कुमार भट्ट, व्यावसायिक अध्ययन विभाग, डॉ. मनोज कुमार पांडे, पर्यटन विभाग व सुश्री रिया गिरी, कंप्यूटर साइंस ने प्रतिभाग किया।

डिजिटल भुगतान व उसमें हो रही धोखाधड़ी से बचाव को लेकर किया जागरूक

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालयव व पाल कॉलेज ऑफ़ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी ने समस्तरूप से 29 मई को डिजिटल भुगतान प्रोद्योगिकी तथा साइबर सिक्योरिटी के सम्बन्ध में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम हल्द्वानी के पाल कॉलेज ऑफ़ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी में किया गया।

इस जागरूकता कार्यक्रम में परियोजना की मुख्य शोध पर्यवेक्षक डॉ. मंजरी अग्रवाल ने शिक्षार्थियों एवं संकाय सदस्यों को

डिजिटल भुगतान को अपनाने की जानकारी दी। जबकि परियोजना की सह शोध पर्यवेक्षक डॉ प्रिया महाजन व सोमेश पाठक ने डिजिटल पेमेंट की विधियों के विषय में विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला में साइबर सिक्योरिटी के विशेषज्ञ के रूप में अनुराग भट्ट ने डिजिटल फ्रॉड से बचने के सम्बन्ध में लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी दी। इस दौरान प्रतिभागियों को भारत में उपलब्ध विभिन्न डिजिटल भुगतान तकनीकों के विषय में तथा साइबर सुरक्षा और ऑनलाइन धोखाधड़ी को रोकने के लिए डिजिटल भुगतान विधियों का उपयोग करते समय अपनाए जाने वाले कई सुरक्षा उपायों के बारे में भी बताया गया। पाल कॉलेज के सलाहकार डॉ. केके पांडे ने कहा कि साइबर सिक्यूरिटी आज की आवश्यकता है। उन्होंने टीम को स्थानीय समुदाय में इस तरह के और कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के प्रारम्भ में डॉ सुबो चटोपाध्याय, डायरेक्टर पाल कॉलेज ऑफ़ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी ने आगुन्तको का स्वागत किया। कार्यशाला यूसर्क द्वारा वित्त पोषित शोध परियोजना के अंतर्गत आयोजित की गयी। यह जागरूकता कार्यक्रम उत्तराखण्ड के अलग-अलग हिस्सों में चलाया जा रहा है।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. मंजरी अग्रवाल ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम में डॉ. किरण सती, डॉ. नेहा भट्ट, ललिता सैनी तथा तनुजा पांडे आदि का सहयोग रहा।

यूओयू में पीएचडी शिक्षार्थियों की शोध पाठशाला आयोजित

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में पीएचडी कार्यक्रम में प्रवेश परीक्षा के बाद पंजीकृत शिक्षार्थियों के लिए ६ माह का कोर्स पाठ्यक्रम शुरू हुआ है। शोध का अर्थ, शोध अवधारणा, शोध विधियों, शोध के महत्व आदि पहलुओं पर विश्वविद्यालय के प्रध्यापको व वाह्य विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न संबंधित विषयों के अंतर्गत पंजीकृत शिक्षार्थियों के लिए व्याख्यान कार्यक्रम किये गए हैं। इस वर्ष विभिन्न विषयों में कुल ४३ शिक्षार्थियों ने पी एच डी उपाधि के लिए पंजीकरण करवाया है।

शोध पाठ्यक्रम की कक्षाओं के तहत उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के शोध एवं नवाचार निदेशालय के निदेशक प्रो. गिरिजा पांडेय ने शोध का अर्थ, अवधारणा तथा शोध दर्शन विषयों पर शोध शिक्षार्थियों को व्याख्यान दिया। उन्होंने शोध की बारीकियां समझा कर शिक्षार्थियों की शोध संकल्पना को पूर्ण किया। इसके बाद आगे के दिनों में विभिन्न सत्रों में विभिन्न शिक्षकों के व्याख्यान/ कक्षाएं आयोजित की गयीं।

यूओयू और पंजाब राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में सहयोगात्मक प्रयासों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के तहत, उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी (UOU), हल्द्वानी और जगत गुरु नानक देव पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी (JGND PSOU), पटियाला ने 15 अप्रैल, 2024 को एक समझौता ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर हुए।

एमओयू आदान-प्रदान समारोह में जेजीएनडी पीएसओयू के रजिस्ट्रार प्रोफेसर मंजीत सिंह और उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और निदेशक डॉ. जितेंद्र पांडे के बीच उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो ओपीएस नेगी और जेजीएनडी पीएसओयू के कुलपति प्रो करमजीत सिंह की उपस्थिति में हस्ताक्षरित प्रतियों का आदान-प्रदान किया गया। डॉ. गुरदीप सिंह बत्रा, डीन-अकादमिक, डॉ. कंवलवीर सिंह ढींढसा- परीक्षा नियंत्रक, डॉ. बलजीत सिंह खेहरा, निदेशक-एलएससी, जैसी उल्लेखनीय हस्तियों ने सहयोग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

समझौते में सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों को शामिल किया गया है, जिसमें अनुसंधान और विकास सहयोग, शैक्षणिक कार्यक्रमों में संयुक्त भागीदारी, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (ओईआर) और मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (एमओओसी) को बढ़ावा देना और कार्यक्रम डिजाइन और वितरण में सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना शामिल है। इसके अलावा, सहयोग का उद्देश्य कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ाना, शिक्षार्थियों के लिए रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना और सेमिनार और साइट विजिट सहित विभिन्न पहलों के माध्यम से संकाय विकास की सुविधा प्रदान करना है। समारोह में विभिन्न निदेशकगण, परीक्षा नियंत्रक और स्कूलों के प्रमुखों सहित प्रमुख हितधारकों की उपस्थिति देखी गई, जो मुक्तऔर दूरस्थ शिक्षा की पहल को आगे बढ़ाने के लिए दोनों संस्थानों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

शोधर्थियों को सिखाए यात्राओं से शोध टूल किट विकसित करने के गुर

- **शोध एवं नवाचार निदेशालय ने शोधार्थियों से साझा किया अस्कोट-आराकोट यात्रा के 40 सालों का परिदृश्य**
- **शोधार्थी के लिए बहुत महत्तवपूर्ण है अस्कोट आराकोट यात्रा- गिरिजा पांडे**

'यात्राएं केवल सैर सपाटे के लिए नहीं होती' अगर आपके पास एक शोधार्थी वाली गहन दृष्टि है, तो आप इन यात्राओं से नया शोध नजरिया व टूल किट विकसित कर सकते हैं'। यह वक्तव्य उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के शोध एवं नवाचार निदेशालय के निदेशक व समाज विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक व इतिहास के प्रोफेसर प्रो. गिरिजा पांडे ने अपने वक्तव्य में कहा। शुक्रवार को विवि के शोध ,छात्रों को उन्होंने अस्कोट आराकोट यात्रा की स्लाइड शो के जरिये उत्तराखंड की पिछले 50 सालों की यात्रा कराई।

पहाड़ संस्था द्वारा हर दस साल में आयोजित अस्कोट-आराकोट यात्रा की। इस वर्ष स्वर्ण जयंती है। राज्य के अलग-अलग हिस्सों में इस यात्रा पर बातचीत कर लोगों को यात्रा में आने के लिए उत्साहित किया गया है। इसी क्रम में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के शोधार्थी व प्राध्यापकों के लिए भी इस यात्रा के जरिये पिछले 40 साल के उत्तराखंड के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय बदलावों को सामने रखा गया। प्रो गिरिजा पाण्डेय ने कहा कि अगर हम जागरूक हैं तो यात्राओं से हम अपने समाज व भूगोल की गहराई से पड़ताल कर सकते हैं। मनुष्य के प्रकृति पर अनावश्यक हस्तक्षेप ने पूरी पारिस्थितिकी को बिगाड़ के रख दिया है। उन्होंने बताया कि 40 साल पहले बेहद कम बालिकाएं स्कूलों में दिखती थीं, लेकिन आज विद्यालय छात्राओं से भरे पडे हैं। सड़कों के किनारे बसे गांव छोटे कस्बों में तब्दील हो गए हैं। राज्य के अर्न्तवर्ती क्षेत्रों में मोबाइल कनेक्टिविटी व सड़कों तक पहुंच अभी भी दूर ही है।

इस अवसर पर शोध निदेशालय के उपनिदेशक डा. प्रवेश कुमार सहगल, डा. एस.एन.ओझा, डा. मंजरी अग्रवाल, डा.शालिनी चौधरी, डा.घनश्याम जोशी, डा. शशांक शुक्ला, डा. दीपांकुर जोशी, शुभांकर शुक्ला, सुमित प्रसाद, संपत्ति नेगी तथा गणेश जोशी, दीपिका नेगी, भूपेन्द्र सिंह रावत, राजेश जोशी, समेत कई शोधार्थी मौजूद रहे।

डॉ० दीपांकुर जोशी ने दिया रूद्रपुर में प्रसार प्रशिक्षण केंन्द्र में व्याख्यान

प्रसार प्रशिक्षण केंद्र रुद्रपुर द्वारा 26 जून 2024 को उधम सिंह नगर जिले के लोक सूचना अधिकारिओं के लिए सूचना का अधिकार विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में विधि विद्याशाखा के समन्वयक डॉ दीपांकुर जोशी द्वारा रिसोर्स पर्सन के रूप में व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान को सभी प्रतिभागियों द्वारा बेहद सराहा गया।

गृह विज्ञान विभाग में इन्डक्शन प्रोग्राम आयोजित

गृह विज्ञान विभाग के संकाय सदस्यों डॉ. प्रीति बोरा, श्रीमती मोनिका द्विवेदी, डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ ज्योति जोशी एवं डॉ. पूजा भट्ट द्वारा दिनांक २९ अप्रैल, २०२४ को बी.ए. गृह विज्ञान प्रथम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों शीतकालीन सत्र- २०२४) हेतु इंडक्शन कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम (जूम मीटिंग) से सम्पन्न कराया गया।

गृह विज्ञान विभाग के शिक्षकों डॉ. प्रीति बोरा, श्रीमती मोनिका द्विवेदी, डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ ज्योति जोशी एवं डॉ. पूजा भट्ट द्वारा दिनांक ३० अप्रैल, २०२४ को एम.ए. गृह विज्ञान प्रथम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों (शीतकालीन सत्र-२०२४) हेतु इंडक्शन कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम (जूम मीटिंग) से सम्पन्न कराया गया।

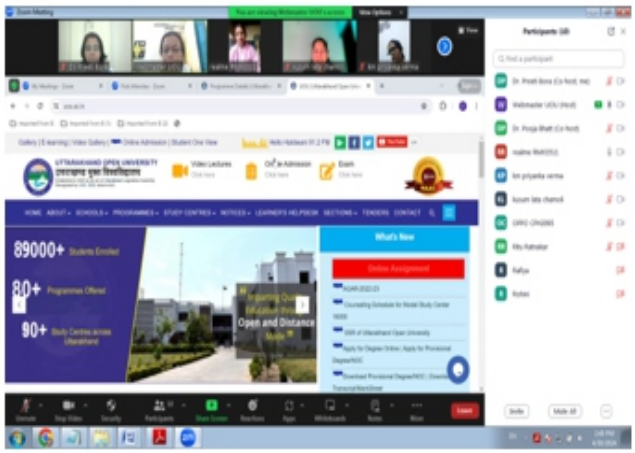

दिनांक १० मई, 2024 को गृह विज्ञान विभाग द्वारा एम०ए० गृह विज्ञान चतुर्थ सेमेस्टर के लघु शोध प्रबंध की मौखिक परीक्षा ऑनलाइन माध्यम (जूम मीटिंग) से सम्पन्न कराई गई।

गृह विज्ञान विभाग द्वारा २५ मई, २०२४ को गृह विज्ञान विभाग की अध्ययन बोर्ड की बैठक ऑनलाइन माध्यम (जूम मीटिंग) से सम्पन्न कराई गई जिसमें नई शिक्षा नीति के अनुसार बी.ए.-२३ पाठ्यक्रम के पाँचवे सेमेस्टर में लघु परियोजना एवं छठे सेमेस्टर में मुख्य वैकल्पिक विषय के सम्बन्ध में चर्चा की गई।

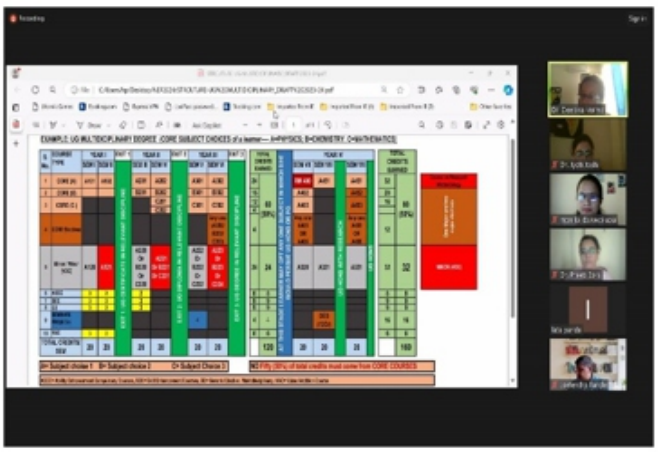

महामहिम राज्यपाल के नैनीताल राजभवन प्रवास पर 'हेलो हल्द्वानी 91.2 FM' से बातचीत

माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) कुछ समय नैनीताल राजभवन प्रवास पर रहे। इस दौरान नैनीताल में गोल्फ टूर्नामेंट का भी आयोजन कराया गया। साथ ही पूर्व-सैनिकों का सम्मेलन भी कराया गया। इस दौरान राज्यपाल महोदय ने उत्तराखण्ड को सैनिकों की भूमि बताया। उन्होंने राज्य की युवा प्रतिभाओं की सराहना करते हुए निरंतर नवाचार करते रहने की प्रेरणा भी दी। राज्यपाल महोदय के नैनीताल राजभवन प्रवास के अनुभव पर 'हैलो हल्द्वानी 91.2 FM' की तरफ से बात की डॉ० राकेश चन्द्र रयाल ने बातकी।

रेडियो भी पत्रकारिता का एक अंग है। ऐसे में रेडियो की यह भी एक भूमिका है कि रेडियो पत्रकारिता को एक बेहतर दिशा देने का प्रयास करे। इस उद्देश्य को लेकर हिंदी पत्रकारिता दिवस के अवसर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर रेडियो "हैलो हल्द्वानी" ने अखबारों में सफलता की कहानियों को स्थान दिया जान कितना ज़रूरी है इस विषय को लेकर भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली के पत्रकारिता के प्रोफेसर डॉ प्रमोद कुमार से बात की और माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश के कुलपति प्रोफेसर के.जी. सुरेश के साथ बेहतर पत्रकारिता हेतु साहित्य पढ़े जाने के महत्व पर बातचीत की गयी।

साहित्य और रेडियो के सह अस्तित्व को समझते हुए साहित्यकार और विभागाध्यक्ष - हिन्दी, एमबीपीजी कॉलेज, हल्द्वानी, प्रो० प्रभा पन्त से उनके बाल साहित्य पर बात की गयी।

समाज में बाल श्रम कितना बड़ा अभिशाप है इस विषय पर भी विश्व बालश्रम निषेध दिवस (12 जून) को रेडियो पर भी चर्चा आयोजित की गयी, जिसमे उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग से डॉ० नीरजा सिंह, डॉ० अपराजिता उपाध्याय और कुशा सिंह ने प्रतिभाग किया।

समुदाय के साथ ही शिक्षार्थियों के लिए अपनी भूमिका निभाते हुए हेल्लो हल्द्वानी द्वारा विविध विषयों की ऑडियो शिक्षण सामग्री का प्रसारण रेडियो पर किया गया और समय समय पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षार्थियों के अनुभवों को भी रेडियो पर साझा किया गया।

समुदाय के लिए भूमिकाओं का निर्वहन कर रहा "हेलो हल्द्वानी"

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय से संचालित होने वाला सामुदायिक रेडियो विश्वविद्यालय से जुड़े हुए शिक्षार्थियों के साथ ही समुदाय के लिए भी अपनी भूमिकाओं का निर्वाहन लगातार कर रहा है। जहाँ समुदाय के लिए जागरूकता, शिक्षा, स्वास्थ, साहित्य संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों को प्रसारित करता रहा है। वहीं शिक्षार्थियों के लिए भी लगातार ऑडियो शिक्षण सामग्री का प्रसारण भी इस सामुदायिक रेडियो पर लगातार होता रहा है। इस रेडियो पर 60 फीसदी समुदाय के कार्यक्रम के साथ ही लगभग 40 फीसदी कार्यक्रम शिक्षार्थियों के लिए रहते हैं। यह रेडियो जहाँ प्रतिदिन प्रातः 10.30 से सायं 4.30 तक ऑन-एयर प्रसारण करता है वहीँ पॉडकास्ट, यूट्यूब और फेसबुक पेज के माध्यम से भी अपने श्रोताओं तक पहुंचता है।
यदि कुछ विशेष प्रसारणों की बात की जाये तो वह इस प्रकार से हैं -

समुदाय के स्वास्थ को लेकर "हैलो हल्द्वानी" रेडियो हमेशा ही अपनी भूमिका का निर्वाहन बखूबी करता रहा है, इस दौरान डेंगू को लेकर रेडियो ने कार्यक्रम करते हुए डॉ. हरीश पाण्डे (प्रभारी चिकित्सा अधिकारी, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, मोटा हल्दू, जिला नैनीताल से बातचीत आयोजित की गयी।

युवा मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से रेडियो "हैलो हल्द्वानी" ने SVEEP (Systematic Voters' Education and Electoral Participation) के साथ मिलाकर भी रेडियो कार्यक्रम किये।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय बना क्षय मित्र

प्रधानमंत्री टी0 बी0 मुक्त भारत अभियान के तहत उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ओ. पी. एस. नेगी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय द्वारा 05 क्षय रोगियों को गोद लिया गया है। इसके तहत विश्वविद्याल द्वारा 06 माह तक इन 05 क्षय रोगियों को न्यूट्रीशन किट प्रदान की जायेगी। इस हेतु श्रीमती रेखा बिष्ट, सहायक क्षेत्रीय निदेशक को नोडल ऑफिसर नामित किया गया है।

इ स माह विश्वविद्यालय ने 05 क्षय रोगियों को न्यूट्रीशन किट सोबन सिंह जीना बेस हॉस्पिटल में प्रदान किये। इस अवसर पर प्रो0 पी0डी0 पंत, कुलसचिव, डॉ0 डिगर सिंह फर्स्वाण, श्रीमती रेखा बिष्ट एवं श्री बृजेश कुमार बनकोटी सहायक क्षेत्रीय निदेशक, श्री विभू काण्डपाल तथा श्री प्रमोद भट्ट, वरिष्ठ उपचार निरीक्षक, हल्द्वानी ब्लॉक उपस्थित रहे।

महिलाओं के लिए शैक्षिक, कानूनी व स्वावलंबन से जुडे पाठ्यक्रम होंगे शुरु

21 वीं सदी महिलाओं की सदी है। अपने दम पर महिलाएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं अगर उन्हें समाज का परिवार का सहयोग मिलता है तो वह इस राष्ट्र के चहुमुंखी विकास में अपना योगदान दे सकती हैं। शिक्षण संस्थाओं को उन्हें फ्रंटलाइन में रखने की मनोवृत्ति रखनी होगी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ओ.पी.एस. नेगी का. मौका था उत्तराखंड मुक्त विश्वविदयालय के महिला अध्ययन केन्द्र के उद्घाटन का। उन्होंने खास तौर पर घरेलू महिलाओं के योगदान को बहुत सराहा। इस मौके पर ललिता कापड़ी की पुस्तक महिलाएं संघर्ष का भी विमोचन हुआ। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि व पुस्तक के प्रकाशक अविचल प्रकाशन के गजेन्द्र बटोही ने कहा कि इस पुस्तक का मूल्यांकन आने वाला समाज करेगा। मुक्त वक्ता के तौर पर सोशल वर्क में असिसटेंट प्रोफेसर डा. नीरजा सिंह ने कहा कि महिला अध्ययन केन्द्रों की शुरुआत भारत में १९८६ से हो गयी थी लेकिन हम सब को अपने विश्वविद्यालयों में इन केन्द्रों को खोलने में लगभग ४० साल का वक्त लग गया लेकिन अच्छा है कि अब लोग लैंगिक असमानता के नजरिये से मुक्त होकर समाज को देख रहे हैं। नयी पीढ़ी जेंडर स्टीरियोटाइप्स के टैबू को तोड़ रही है। महिला अध्ययन केन्द्र की निदेशक प्रोफेसर रेनू प्रकाश ने कहा कि महिला अध्ययन केन्द्र महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। महिला अध्ययन केन्द्र महिलाओं के शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक पहलुओं के विकास के लिए कार्य करेगा। फ्रंटलाइन सपने और संघर्ष पुस्तक की लेखिका ललिता कापड़ी ने कहा

कि इस पुस्तक में ५१ महिलाओं के संघर्षों की कहानियां हैं, ये हमारी अन्य महिलाओं को एक रास्ता दिखाने का काम करेगी। महिला अध्ययन केन्द्र के सह संयोजक व पत्रकारिता विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डा. राकेश चन्द्र रयाल ने इसमें महिलाओं के मौलिक व संवैधानिक अधिकारों से जुडे पाठ्यक्रम होगें साथ ही विधिक अधिकारों को लेकर कैंप लगाए जाएंगे। इसके अलावा महिलाओं को उद्यमिता से भी जोड़ा जाएगा जिसके अन्तगत होम स्टे, कम्युनिकेशन स्किल, मीडिया एवं वूमैन इंपावरमेंट व भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित कोर्सेस शुरु किये जाएंगे। सोशल मीडिया में महिलाओं को अभिव्यक्ति कैसे मिले इस पर भी उन्होंने बात रखी। इस अधय्यन केन्द्र की घोषणा गत वर्ष कुलपति प्रो. ओपीएस नेगी द्वारा की गयी थी.

इस मौके पर डा. मंजरी अग्रवाल, डा. डिगर सिंह फरस्वाण, गोपाल सिंह गौनिया, डा. शालिनी चौधरी, डा. नागेन्द्र गंगोला, नमिता वर्मा, डा.नीरज जोशी, डा. शशांक शुक्ला, वरिष्ठ साहित्यकार डा. दीपा गोबाड़ी, डा. शशि जोशी, प्रो. पी.डी पंत, लिटिल फ्लावर स्कूल की प्रबंधक शांति जीना, जय शारदा समूह की नीमा बिष्ट समेत दर्जनों महिलाएं उपस्थित रही। इस मौके पर समाज सेवी कनक चंद, पूनम शर्मा, रमा बिष्ट, गंगा जोशी, सुमन पांडे, सावित्री दुग्ताल,पार्वती किरौला, दीपा फुलेरा, कांता साह को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. रुचि तिवारी ,डा. गुंजन जोशी व अरुणा ने किया।

मानवाधिकार पर परास्नातक कार्यक्रम को मंजूरी

मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय विधि विभाग की बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक में मानवाधिकार पर दो वर्षीय परास्नातक कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को संस्तुति प्रदान की गई। बैठक में कुमाऊं विश्वविद्यालय राजनीतिशास्त्र विभाग से प्रो. नीता बोरा शर्मा, एस. एस. जीना विश्वविद्यालय विधि विभाग से प्रो.डी के भट्ट, एच.एन.बी. गड़वाल विश्वविद्यालय के पूर्व प्राचार्य और हिमालयन विश्वविद्यालय देहरादून के पूर्व कुलपति प्रो जे.पी.पौचौरी, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय मानवाधिकार विभाग के हेड ऑफ स्कूल डॉ. कमल देवलाल और विभाग के समन्वयक डॉ. दीपांकुर जोशी ने प्रतिभाग किया।

डॉ. दीपांकुर जोशी ने बताया कि उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय देश के चुनिंदा विश्वविद्यालयों में शामिल हो जाएगा जो मानवाधिकार पर परास्नातक कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। प्रदेश और देशभर के लाखों विधार्थी इस कार्यक्रम के संचालित होने से लाभान्वित होंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो ओ. पी. एस. नेगी ने कार्यक्रम के जल्दी ही प्रारंभ करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विभाग को बधाई दी है।

बीएड (विशेष शिक्षा) विभाग द्वारा माह जून , 2024 में आयोजित कार्यक्रम

बीएड (विशेष शिक्षा) पाठयक्रम के सत्र 2022 के चतुर्थ सेमेस्टर व सत्र 2023 के द्वितीय सेमेस्टर के आदर्श अध्ययन केंद्र हल्द्वानी व देहरादून में नामांकित विद्यार्थियों की ऑफ़ लाईन मौखिकी/शिक्षण से सम्बंधित प्रयोगात्मक कक्षायें/ कार्यशाला का आयोजन दिनांक 29 मई, 2024 से 30 जून, 2024 तक करायी गयी। कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर, हल्द्वानी, राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान, देहरादून और ऋषिकेश में किया गया। कार्यशाला में आंतरिक विषय विशेषज्ञों के अतिरिक्त वाह्य विषय विशेषज्ञों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षण से सम्बंधित तकनीकि का ज्ञान दिया गया। साथ ही अनुरुपित शिक्षण के माध्यम से विशेष वच्चों की कक्षाओं के संचालन में आने वाली बाधाओं के बारे में भी बताया गया।

बीएड (विशेष शिक्षा) पाठयक्रम के विद्यार्थीयों द्वारा दिनांक ५ जून को कुलसचिव प्रो. पी. डी. पंत की अध्यक्षता में पर्यावरण दिवस का आयोजन कर विश्वविद्यालय में लगे पौधों का संरक्षण किया गया।

बीएड (विशेष शिक्षा) पाठयक्रम विद्यार्थियों द्वारा दिनांक ३ जून, २०२४ को अमर उजाला समाचार पत्र की प्रेस का भ्रमण कर समाचार पत्र की छपाई (प्रिंटिंग), समाचारों का संकलन, समाचार पत्र का वितरण इत्यादि की जानकारी प्राप्त की गई। साथ ही समाचार पत्र की प्रत्यक्ष छपाई (प्रिंटिंग) की प्रक्रिया को साक्षात देखा।इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों द्वारा अपनी जिज्ञासा को शांत करते हुये समाचार पत्र से सम्बंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर सम्पादक महोदय से प्राप्त किये। इस अवसर पर विशेष शिक्षा विभाग के समंवयक डॉ सिद्धार्थ पोखरियाल, सहा. प्रा. श्री तरुण नेगी व श्री मती रश्मि सक्सेना भी उपस्थित रहीं।

विशेष शिक्षा विभाग द्वारा विशेष आवश्यक्ता वाले बच्चों के अभिभावकों की समस्यायें एवं निदान विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक २६ जून, २०२४ को राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान, देहरादून के अष्टावक्र सभागार में किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के निदेशक श्री मनीष वर्मा द्वारा किया गया। जिसमें देहरादून व समीपवर्ती क्षेत्रों में निवासरत अभिभावकों व विशेष शिक्षकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यशाला में विशेष बच्चों में स्पीच से सम्बंधित समस्याओं के निराकरण के लिये ऑडियोलाजिस्ट डॉ मुरली सिंह, दृष्टि बाधित बच्चों के अभिभावकों की समस्यायें एवं निदान के लिये डॉ विनोद कैन, ऑटिज्म बच्चों के अभिभावकों की समस्यायें एवं निदान के लिये श्रीमती प्रीती अरोडा, विशेष आवश्यक्ता वाले बच्चों के लिये सहायक तकनीकी उपकरणों के बारे में डॉ पंकज कुमार ओर बौद्धिक अक्षम बच्चों के अभिभावकों की समस्यायें एवं निदान के लिये डॉ सिद्धार्थ पोखरियाल द्वारा व्यख्यान दिया गया।

यूओयू के विशिष्ट शिक्षा के शिक्षार्थीयों का शिक्षक के रूप में हुआ चयन

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा विभाग के विद्यार्थीयों (पूजा भट्ट. दीप्ति कुंजवाल, दीपिका पंवार) का चयन दिव्यांगजनों के विशेष शिक्षक के रूप में केंद्रीय विद्यालय, पिथौरागढ, भीमताल, उत्तरकाशी में हुआ। इसके अतिरिक्त राजस्थान में श्रवण बाधित दिव्यांगजन के लिये विशेष शिक्षक के रूप में विद्यार्थी योगेश शर्मा का चयन हुआ है।

पूजा भट्ट

दीप्ति कुंजवाल

दीपिका पंवार

योगेश शर्मा

राष्ट्रीय सेवायोजना, आदर्श अध्ययन केंद्र, देहरादून इकाई -विशेष शिविर रिपोर्ट

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्जन के साथ-साथ युवा छात्र-छात्राओं को निस्वार्थ समाज सेवा, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीयता का भाव एवं बहुआयामी व्यक्तित्व विकास के लिए परिपक्व एवं सक्षम बनाना है।

डॉ0 सुभाष रमोला, एन0एस0एस0 कार्यक्रम अधिकारी द्वारा कार्यक्रम मे उपस्थित डॉ0 भावना डोभाल, श्री अनिल कण्डारी, सहायक क्षेत्रीय निदेशक देहरादून, श्री गोविन्द रावत, सहायक क्षेत्रीय निदेशक उत्तरकाशी एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के युवा स्वयंसेवकों एवं परिसर कार्यालय कार्मिकों को एन0एस0एस0 के लक्ष्य गीत, सिद्धांत वाक्य और उद्देश्यो से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर का उद्देश्य स्वयंसेवकों के बीच एक दूसरे के लिए त्याग एवं मित्रवत व्यवहार की भावना विकसित करना और सामुदायिक सेवा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को विकसित करना है।

एन0एस0एस0 कार्यक्रम अधिकारी द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को प्रातः जागरण, प्रार्थना, व्यायाम, उपस्थिति, दायित्वों का आवंटन, श्रमदान, बौद्धिक सत्र, खेलकूद, दोपहर और रात्रि का भोजन तैयार करना, शिविरार्थियों के दिनभर के कार्यों का मुल्यांकन इत्यादि के बारे मे जानकारी दी गई।

बौद्धिक सत्र के उपरांत लंच दिया गया और उसके बाद डायरी लेखन कार्य किया गया। टी – ब्रेक के बाद स्वयंसेवकों द्वारा खेलकूद का आनंद लिया और बस्ती का भ्रमण किया गया। भ्रमण के पश्चात छात्रों की उपस्थिति और दिनभर के कार्यों का मूल्यांकन किया गया।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
Haldwani, District Nainital
Uttarakhand 263139

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
Haldwani, District Nainital
Uttarakhand 263139

माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड
लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.)
के नैनीताल राजभवन प्रवास पर
'हैलो हल्द्वानी 91.2 FM'
से बातचीत
(वार्ताकार - डॉ० राकेश चन्द्र रयाल)

बीएड छात्रों ने विशेष बच्चों के अध्यापन की विधियां जानीं

जागरण संवाददाता, ऋषिकेश: उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से बीएड छात्रों के लिए आयोजित सात दिवसीय कार्यशाला संपन्न हो गई। कार्यशाला में छात्रों को दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित व अन्य दिव्यांग बच्चों को पढ़ाने की तकनीक सिखाई गई। गंगोत्री विद्या निकेतन इंटर कालेज बापूग्राम में आयोजित कार्यशाला में विशेष शिक्षा विभाग के पोखरियाल ने बौद्धिक रूप से अक्षम, दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित व अधिगम अक्षमता से ग्रसित बच्चों के अध्ययन एवं अध्यापन से जुड़ी कई आवश्यक जानकारी दी। अध्यापन संबंधी तकनीकों के बारे में भी बताया गया। प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार मलासी ने कहा कि बीएड छात्र विशेष शिक्षा के कार्यक्षेत्र में चुनौतियों का सामना करते हुए विशेष बच्चों की शिक्षा व पुनर्वास के लिए सशक्तीकरण की दिशा में

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के अभिभावकों की चुनौतियों पर चर्चा

■ सहारा न्यूज ब्यूरो
देहरादून।

■ यूओयू व एनआईईपीवीडी ने आयोजित की कार्यशाला

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय व राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान (एनआईईपीवीडी) द्वारा संयुक्त रूप से विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को लेकर एक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में अभिभावकों को सशक्त बनाने पर जोर दिया गया, ताकि वह अपने बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सके।

कार्यशाला में विचार व्यक्त करते विशेषज्ञ।

बुधवार को एनआईईपीवीडी के सभागार में आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन एनआईईपीवीडी के निदेशक मनीष वर्मा, विशेष शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य डा. विनोद केन, डा. पंकज कुमार और उत्तराखंड मुक्त विवि विशेष शिक्षा के विभागाध्यक्ष डा. सिद्धार्थ पोखरियाल ने किया। कार्यशाला में विशेषज्ञों ने चार सत्रों में अभिभावकों से सीधा संवाद किया और विभिन्न मुद्दों व चुनौतियों पर चर्चा की। पहले सत्र में डा. मुरली सिंह ने भाषण संबंधी समस्याओं पर चर्चा की और उनके समाधान पर जोर दिया।

द्वितीय सत्र में डा. विनोद केन ने दृष्टिबाधित बच्चों के अभिभावकों की समस्याओं पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र में प्रीति अरोड़ा ने आटिज्म प्रभावित बच्चों के अभिभावकों की चुनौतियों पर चर्चा की। चौथे सत्र में डा. पंकज कुमार ने विशेष अनुभव साझा किये। डा. सिद्धार्थ पोखरियाल ने कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए आभार जताया। साथ ही विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने विशेष शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे कार्यक्रमों पर जोर दिया, जो अभिभावकों को अधिक सक्षम बना सकें।

इस मौके पर अरविंद कोटियाल, तरुण नेगी, डा. सुभाष रमोला, डा. भावना डोभाल समेत अनेक लोग मौजूद थे।

यूओयू की विशेष कार्यशाला: विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों के समर्थन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

राष्ट्रीय सम्पदा रिपोर्टर
अंकित तिवारी

देहरादून। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों के सामने आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान पर केंद्रित एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी और राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान (एन.आई.ई.पी.वी.डी), देहरादून के संयुक्त तत्वाधान में एन.आई.ई.पी.वी.डी.सी के अष्टाक्ष सभागार में किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य अभिभावकों को सशक्त बनाना और उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना था ताकि वे अपने बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

कार्यशाला का उद्घाटन एन.आई.ई.पी.वी.डी. के निदेशक मनीष वर्मा, विशेष शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य डॉ. विनोद केन, डॉ. पंकज कुमार और उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय विशेष शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सिद्धार्थ पोखरियाल द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। यह उद्घाटन समारोह इस बात का प्रतीक था कि समाज में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति संवेदनशीलता और समर्थन को बढ़ावा देने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।विशेषज्ञों ने चार सत्रों में अभिभावकों से सीधा संवाद किया और उन्हें विभिन्न मुद्दों और चुनौतियों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। पहले सत्र में डॉ. मुरली सिंह ने भाषण संबंधी समस्याओं पर चर्चा की और उनके समाधान पर जोर दिया। द्वितीय सत्र में डॉ. विनोद केन ने दृष्टिबाधित बच्चों के अभिभावकों की समस्याओं पर प्रकाश डाला, जबकि तृतीय सत्र में प्रीति अरोड़ा ने ऑटिज्म प्रभावित बच्चों के अभिभावकों की चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया। चौथे सत्र में डॉ. पंकज कुमार ने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सहायक उपकरणों के महत्व पर जानकारी दी।खुला सत्र एक महत्वपूर्ण मंच था जहां विशेषज्ञ स्मृति लोशाली और नीरजा बिष्ट ने छात्र-छात्राओं, प्रतिभागियों और अभिभावकों से सीधा संवाद किया। इस सत्र ने अभिभावकों को अपने अनुभव साझा करने और विशेषज्ञों से व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया।इस कार्यशाला के समापन पर डॉ. सिद्धार्थ पोखरियाल ने कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया और विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विशेष शिक्षा के क्षेत्र में और भी ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया, जो अभिभावकों को अधिक सक्षम बना सकें। इस अवसर पर तरुण नेगी, डॉ सुभाष रमोला, डॉ भावना डोभाल सहित कई प्रतिभागी मौजूद थे।

■ लोकमत, जयपुर

अंतराष्ट्रीय योग दिवस 2024 के उपलक्ष में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के योग विभाग के तत्वधान में 21 दिवसीय निशुल्क योग शिविरों का आयोजन देश के विभिन्न राज्यों में किया जा रहा है।

जिसका संचालन विश्वविद्यालय (योग विभाग) के पूर्व छात्रों एवं अध्यनरत छात्रों के सहयोग से सफलता पूर्वक हो रहा है। विस्तार के संस्थापक शशांक गुप्ता के द्वारा 1 जून से योग सत्र का शुभारंभ आम्रपाली अपार्टमेंट के पार्क में किया गया। जिसके अंतर्गत आसान, प्राण्याम, ध्यान षटकर्म के विभिन्न आयामों को यथास्वरूप सिखाया जा रहा है। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रकार के योग शिविर के प्रतिभागियों द्वारा सराहा जा रहा है। एवं योग को सिर्फ शारीरिक व्यायाम के रूप मे

याद रहेगी ये मुलाकात

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्याल स्पेशल बीएड विभाग के विद्यार्थियों ने उजाला कार्यालय का शैक्षिक भ्रमण कि खबरों के संपादन समेत कई तकनीकी इस दौरान विद्यार्थियों ने अपनी जिज्ञास स्पेशल बीएड विभाग के कोऑर्डिनेटर प्रोफेसर डॉ. सिद्धार्थ पोखरियाल, डॉ. तरुण नेगी आदि रहे। संवाद

जीवात्मा की सेवा कर जीवन को सार्थक बनाएं

देहरादून : उत्तराखंड की आपरेटिव फेडरेशन की प्रबंध निदेशक रमेंद्री मंद्रवाल ने राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवियों को संबोधित करते हुए कहा कि परमात्मा ने हमें यह अमूल्य जीवन दिया है, इसे सार्थक बनाते हुए हमें हर जीवात्मा की सेवा करनी चाहिए।

शुक्रवार को रिस्पना पुल के समीप उत्तराखंड मुक्त विवि में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना का पूर्णकालिक शिविर के समापन में रमेंद्री मंद्रवाल बतौर मुख्य वक्ता शामिल हुईं। शिविर में मुख्य अतिथि उत्तराखंड महिला आयोग की अध्यक्ष कुसुम कंडवाल ने कहा कि आज का युवा राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाता है। यदि राष्ट्र का युवा कमजोर होता है तो राष्ट्र भी कमजोर होगा जो कि चिंता का विषय है।(जासं)

Uttarakhand Open University
(Established by the Govt. of Uttarakhand vide Act No. 23 of 2005)
उत्तराखण्ड सरकार का एक मात्र मुक्त विश्वविद्यालय
University Road, Behind Transport Nagar
(Teen Pani Bypass), Haldwani -263139,Uttarakhand
Phone: 05946-286000, Fax : 05946-264232